वर्ष-1 अंक-1 जून-अगस्त 2022

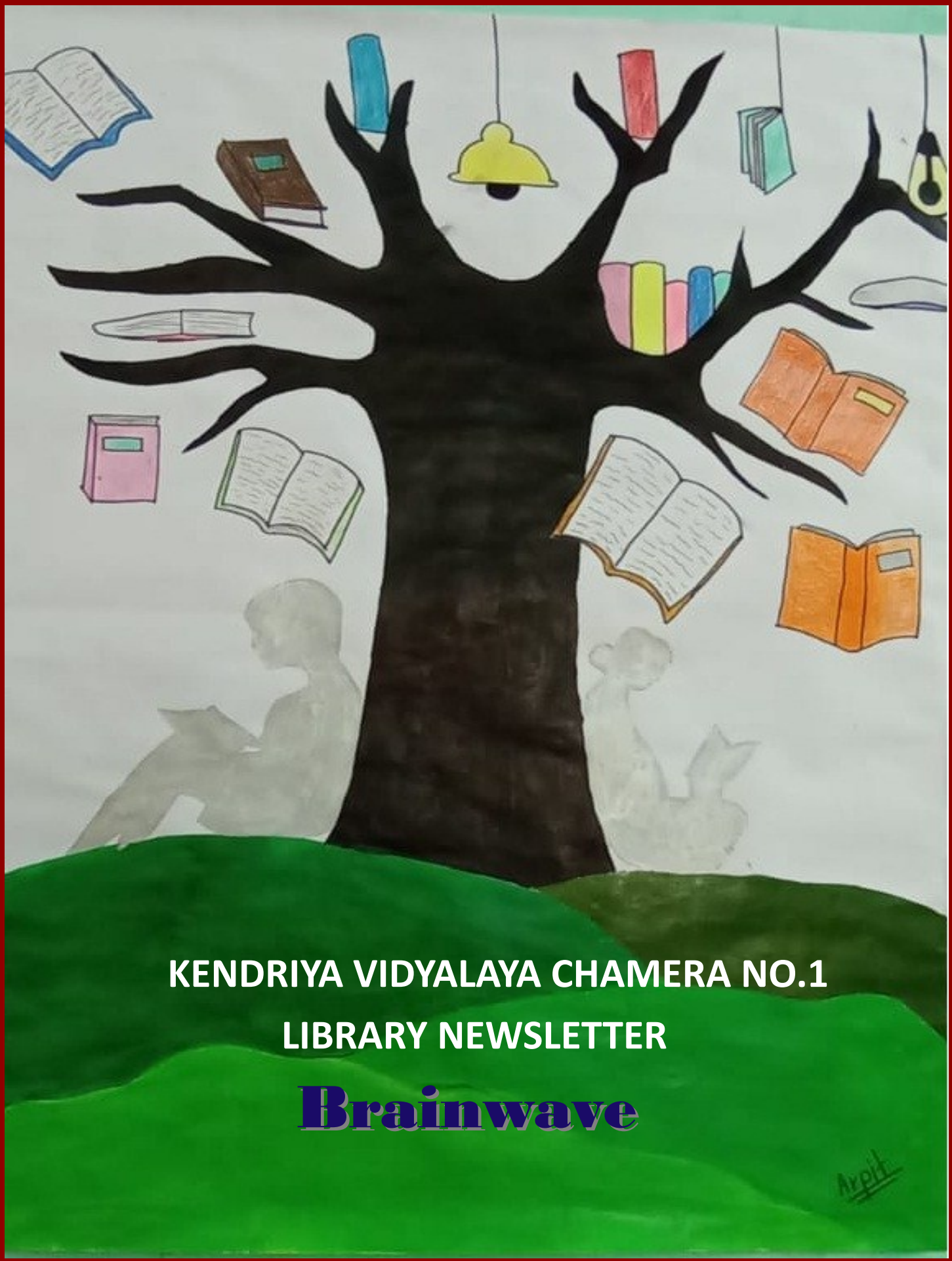

KENDRIYA VIDYALAYA CHAMERA NO.1

LIBRARY NEWSLETTER

Brainwave

अपने लक्ष्य के लिए जोशीले और जुनूनी बनिए..विश्वास रखिए, परिश्रम का फल सफलता ही है...!

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Brainwave

ई' पुस्तकालय पत्रिका

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वर्ष-1 अंक-1 जून-अगस्त 2022

पुस्तकालय नियमावली

1. विद्यालय के सभी विद्यार्थी और स्टाफ पुस्तकालय के सदस्य हैं।
2. एक विद्यार्थी दो सप्ताह की अवधि के लिए एक बार में केवल दो पुस्तकें जारी करवा सकता है।
3. एक स्टाफ पूरे माह की अवधि के लिए एक समय में अधिकतम 05 पुस्तकें जारी करवा सकता है।
4. पुस्तकालय कालांश के दौरान विद्यार्थियों को पुस्तकें जारी की जाएं। पढ़ाई के दौरान कोई पुस्तक जारी व वापस नहीं की जाएगी।
5. पुस्तकालय की पुस्तकों, पत्रिकाओं और समाचार पत्र पर चिन्ह लगाना, अंडर लाईन अथवा लिखना सख्त मना है।
6. संदर्भ पुस्तकें और वर्तमान पत्रिकाएँ किसी भी सदस्य को जारी नहीं की जाएगी। इन्हें केवल पुस्तकालय में ही देखा जा सकता है।
7. यदि पुस्तकें निर्धारित समयावधि में नहीं लौटाई जातीं तो इसे गंभीरता से लिया जाएगा और नियमानुसार जुर्माना लगाया जाएगा।
8. पुस्तकाध्यक्ष किसी भी पुस्तक को किसी भी समय लौटाने के लिए कह सकता है बशर्ते पुस्तक लौटाने की अवधि समाप्त न हुई हो।
9. यदि पुस्तक खराब, फाड़ी अथवा खो जाती है तो संबंधित विद्यार्थी/कार्मिक को पुस्तक की वर्तमान बाजार कीमत अथवा पुस्तक लाकर देनी होगी।
10. कृपया सुनिश्चित करें कि पढ़ने के पश्चात पुस्तकें, पत्रिकाएँ अथवा समाचार पत्र उनके निर्धारित स्थान पर वापस रखे जाते हैं।
11. सदस्य पुस्तकालय फर्नीचर और अन्य उपस्करों की अच्छी देखभाल करेंगे। कृपया सुनिश्चित करें कि पुस्तकालय छोड़ते समय उसकी व्यवस्था वैसी ही हो जैसा कि जब आप आए थे।
12. पुस्तकालय में ड्रिंक और भोजन लाना मना है।
13. पुस्तकालय कंप्यूटर केवल शैक्षिक उद्देश्य के लिए है कृपया कंप्यूटर की सैटिंग के साथ छेड़छाड़ न करें। इंटरनेट सुरक्षा के दिशानिर्देशों का अनुपालन करें।
14. प्रत्येक विद्यार्थी को विद्यालय छोड़ते/स्थानांतरण के समय पुस्तकाध्यक्ष से "बेबाकी प्रमाणपत्र" प्राप्त किया जाना है।
15. पुस्तकालय में आदेशों का दृढ़तापूर्वक अनुपालन करें और मौन बनाए रखें। यदि बहुत आवश्यक हो धीरे बोलें।

Brainwave

ई' पुस्तकालय पत्रिका

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1

वर्ष-1 अंक-1 जून-अगस्त 2022

हमारे प्रेरणास्रोत

श्री एस.एस. चौहान
उपायुक्त, गुरुग्राम संभाग

श्री सुन्दर लाल यादव
प्रभारी प्राचार्य

संपादक मंडल

कु. मालती
(पुस्तकालय अध्यक्ष)

प्रेशिता ठाकुर
कक्षा- पांचवी

सोमाद्री
कक्षा—बारहवीं अ

Brainwave

ई' पुस्तकालय पत्रिका

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1

वर्ष-1 अंक-1 जून-अगस्त 2022

अंदर के पन्नों में

1. संपादक की कलम से 4
2. शिक्षक की कलम से (पुस्तकालय की मनुष्य जीवन में उपयोगिता) 5-6
3. भारत के राष्ट्रीय प्रतीक 7-15
4. राष्ट्रीय खेल दिवस 16
5. Importance of Library 17
6. प्रकृति (कविता) 18
7. Importance of Reading 19
8. Benefits of Reading 20
9. Importance of books in current Era 21-22
10. Sanitation 23
11. Nature's Wealth 24
12. अदभुत तथ्य 25
13. Amazing Facts 26
14. पुस्तक समीक्षा 27-28

Brainwave

ई' पुस्तकालय पत्रिका

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1

वर्ष-1 अंक-1 जून-अगस्त 2022

अंदर के पन्नों में

15. Sudha Murthy: Wise And Otherwise (Book Review) 29-30

16. पुस्तकोपहार उत्सव 31

17. पठन माह 18 जून से 19 जुलाई 2022 32-33

18. पुस्तक प्रदर्शनी 34

19. पुस्तकालय गतिविधियों की एक झलक 35

20. भारत छोड़ो दिवस 36

21. कैरियर परामर्श 37

22. पुस्तकालय गतिविधियाँ ऑनलाइन स्तर पर 38

संपादक की कलम से

के. वि. चमेरा नं. के अंतर्गत कार्य करते हुए विद्यालय पुस्तकालय की त्रैमासिक पत्रिका को सम्पादित करने का यह मेरा पहला प्रयास है | इस पत्रिका को प्रकाशित करने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मनोभावों को एक नया आयाम देना है |

पत्रिकाएं अपने विचारों, भावनाओं और किसी विषय पर अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करने का एक सरल माध्यम होती है, और के. वि. चमेरा नं.1 का पुस्तकालय इस उद्देश्य को प्राप्त करने में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करने का एक छोटा सा प्रयास कर रही है |

जैसा कि आप सबको विदित है कि इस वर्ष भारत अपना 76 स्वतंत्रता दिवस मना रहा है | इसी संदर्भ में इस अंक में संपादक के द्वारा भारत के राष्ट्रीय प्रतीक चिन्हों पर एक संक्षिप्त जानकारी का विशेष लेख सम्पादित किया गया है , साथ ही राष्ट्रीय खेल दिवस जो कि सम्पूर्ण भारत में खेल भावना को बढ़ाने के लिए अति उत्साह के साथ मनाया जाता हैं |इस विषय पर भी विद्यालय की एक छात्रा के द्वारा विशेष लेख सम्पादित किया गया है |

मै कु. मालती , पुस्तकालय अध्यक्ष अपने समस्त संपादक मण्डल के सदस्यों एवं इस पत्रिका को सम्पादित करने में सहयोग प्रदान करने वाले समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करती हूँ , जिनके सहयोग और सकारात्मक अभिवृत्ति से यह पत्रिका मूर्त रूप ले सकी | मुझे आशा है कि पत्रिका का यह अंक पाठकों को पसंद आएगा |

धन्यवाद

पुस्तकालय की मनुष्य जीवन में उपयोगिता

व्यक्ति के ज्ञान को विस्तार देने के लिए पुस्तकालय बहुत ही उपयोगी माध्यम हैं| औसत वर्ग का व्यक्ति अपनी रूचि या जरुरत की सभी महँगी किताबों को नहीं खरीद पाता और पैसे के अभाव में वह ज्ञान और शिक्षा से वंचित रह जाता है, परंतु पुस्तकालय के माध्यम से सभी प्रकार की किताबों एवं उनके ज्ञान का आसानी से लाभ लिया जा सकता है|

भारत के गाँव में पुस्तकालय की बहुत आवश्यकता है,जिससे की सभी वर्ग के लोग शिक्षित हो कर अपने ज्ञान को बढ़ा सके| जरुरत है, तो बस गाँव के लोगो को नए आयाम देने की|

आज पढ़े लिखे लोगो के लिए पुस्तकालय रोजगार का साधन भी बन रहा है, इसके लिए लोग अपनी जरुरत के अनुसार अपने शहर और क्षेत्र में पुस्तकालय बनाकर अपनी आय बढ़ाने में सफल हो रहे है |

पुस्तकालय पढ़ाई करने का एक अच्छा स्थान होता है, इसको ध्यान में रखते हुए आज अनेक शहरो में एक से अनेक पुस्तकालय खुल रहे है, इसलिए पुस्तकालय रोजगार के नए आयाम भी स्थापित कर रहे है |

कहते है, किताबे इन्सानों की सबसे अच्छी दोस्त होती है| जैसे व्यक्ति अपने दोस्त का हर पल, हर घडी, हर मुश्किल में साथ देते है, वैसे ही किताबे भी हर विषम परिस्थिति में मनुष्य की सहायक होती है | किताबों में हर मुश्किल सवाल, परिस्थिति का हल छुपा होता है| इंसान किसी भी दुविधा में रहे, किताबों को पढ़ने से, समझने से उसकी सोच का विस्तार होता है | कुछ लोग किताबे पढ़ने के शौकीन होते है | उन्हें तरह तरह की किताबों का संग्रह करना अच्छा लगता है |

मानव शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए जिस प्रकार हमें पौष्टिक तथा संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार मानव मष्तिष्क को स्वस्थ रखने एवं बौद्धिक स्तर पर विवेकशील बनाने के लिए पुस्तकों की आवश्यकता होती है |

नए-नए वैज्ञानिक खोजो को भी मूर्तरूप देने में पुस्तकालय अपनी अहम् भूमिका निभाते है |

बच्चो में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं मानसिक चेतना की उच्च कोटि विकसित करने में पुस्तकालय का महत्वपूर्ण योगदान होता है |

संक्षेप में पुस्तकें मनुष्य के जीवन में जहाँ एक सच्चे मित्र की भूमिका निभाती है वही पुस्तकालय मनुष्य को उसके प्रकृति प्रदत्त ज्ञान को संवर्धित एवं विवेकशील बनने में सहायक होते है |

इन सभी मापदंडो को यथार्थ में बच्चो में विकसित करने में केंद्रीय विद्यालय चमेर1 का पुस्तकालय, सुश्री मालती पुस्तकालय अध्यक्ष के नेतृत्व में अग्रसर है | एक सुसज्जित आधुनिक तकनीकी से सम्बद्ध एक सुन्दर वातावरण के साथ पुस्तकालय बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है |

पुस्तकालयध्यक्षा सुश्री मालती जी को उनके अथक प्रयास के लिए मैं बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि ये सदैव नित नए आयामों को पुस्तकालय के माध्यम से बच्चों एवं समाज के हितो में स्थापित करती रहेंगी |

श्री सुलेख चन्द
कार्यानुभव शिक्षक

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

प्रत्तेक व्यक्ति को स्वतंत्र हवा में साँस लेने, अपना मत प्रकट करने दैहिक और प्राणों की रक्षा करने का अधिकार होता है और भारत के निवासियों को यह अधिकार कठिन संघर्षो और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों के उपरान्त 15 अगस्त 1947 को प्राप्त हुआ | इस वर्ष भारत ने अपना 76वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया |

इसी अवसर पर आज मैं आप सबको भारत के विभिन्न प्रतीकों के विषय में संक्षिप्त जानकारी से अवगत कराती हूँ -

राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) :- भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है जिसे 22 जुलाई 1947 में भारतीय संविधान के द्वारा स्वीकृत किया गया | भारत के राष्ट्रीय ध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 है | भारत के राष्ट्रीय ध्वज में जिसे हम तिरंगा कहते हैं तीन रंग है केसरिया पट्टी जो देश की ताकत और साहस का प्रतीक है सफेद पट्टी शांति और सत्य का प्रतीक है हरी पट्टी देश के विकास और उर्वरता को दर्शाती है और मध्य में एक चक्र है जिसमें 24 तीलियां है जिसका रंग नीला है भारत के निरंतर प्रगतिशील होने का सूचक है | इस चक्र का व्यास लगभग सफेद पट्टी के बराबर ही होता है | भारत के राष्ट्रीय ध्वज का डिज़ाइन एन पिंगलई के द्वारा बनाया गया था |

राष्ट्रीय गान :- भारत का राष्ट्रीय गान जन गण मन है जिसे रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा रचित गीतांजलि से लिया गया है | भारत के राष्ट्रीय गान को गाने में लगभग 52 सेकंड का समय लगता है | भारत के राष्ट्रीय गान जन गण मन को सर्वप्रथम 27 दिसंबर 1911के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कोलकाता के 26वें अधिवेशन में गाया गया था | हमारे राष्ट्रीय गान को 24 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के द्वारा अपनाया गया | भारत के राष्ट्रीय गान को भारत के सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर गाये जाने का प्रावधान है |

राष्ट्रीय गीत :- भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम है जिसे बंकिम चंद्र चटर्जी के द्वारा लिखा गया है इसके दो छंद को 1950 में आधिकारिक रुप से भारत के राष्ट्रगीत के रुप में अंगीकृत किया गया था। वहीं वास्तविक वन्दे मातरम् में छः छंद है। इस गीत को बंकिमचन्द्र चैटर्जी ने 1882 में बंगाली और संस्कृत भाषा में अपने उपन्यास आनन्दमठ् में लिखा था | भारत के राष्ट्रीय गीत को भारतीय संविधान के द्वारा 24 जनवरी 1950 को अपनाया गया | इसे गाने में लगभग 65 सेकंड का समय लगता है | भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम को सर्वप्रथम 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 12वें अधिवेशन (कलकत्ता) में गाया गया था | आकाशवाणी और दूरदर्शन के दैनिक कार्यक्रमों की शुरुआत भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम से ही की जाती है |

राष्ट्रीय चिन्ह :- भारत का राष्ट्र चिन्ह सम्राट अशोक के द्वारा निर्मित और सारनाथ में स्थापित सिंह स्तंभ से लिया गया है भारत के राष्ट्रीय चिन्ह को 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के द्वारा अपनाया गया | अशोक स्तंभ में मूलतः 4 सिंह है सामने से देखने पर केवल तीन सिंह ही दिखाई देते है | सारनाथ स्थित राष्ट्रीय स्तंभ से राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में मूलतः शीर्ष भाग को ही लिया गया है | राष्ट्रीय चिन्ह में शेर के अतिरिक्त सिंह सांड और घोड़े की प्रतिमाएं भी बनी हुई है |

राष्ट्रीय पक्षी :- भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है जिसे 26 जनवरी 1963 को भारतीय संविधान के राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया | मोर बेहद सुंदर पक्षी होता है जो प्रायः दक्षिण एशिया में पाया जाता है |मोर का वैज्ञानिक नाम पावो क्रिस्टेटस है| भारतीय वन एवं वन्य प्राणी (सुरक्षा) अधिनियम 1972 के अंतर्गत मोर को पूर्ण संरक्षण प्राप्त है |

राष्ट्रीय संवत :- भारत के राष्ट्रीय संवाद के रूप में शक संवत को भारतीय संविधान के द्वारा मान्यता दी गई है शक संवत का प्रयोग भारत सरकार और आकाशवाणी के द्वारा जारी संचार व्यक्तियों में गिरी गिरी गोरियन कैलेंडर के साथ प्रयोग किया जाता है ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 22 मार्च 1957 और शक संवत के अनुसार 1 चैत्र 1879 को इसे भारतीय संविधान के द्वारा अपनाया गया था | शक संवत के अनुसार साल का प्रथम मास चैत्र और साल का अंतिम महीना फाल्गुन होता है |

सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार भारत रत्न :- भारत का सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार भारत रत्न है तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद के द्वारा 2 जनवरी 1954 में इसकी शुरुआत की गई थी | भारत रत्न पुरस्कार कला, विज्ञान, साहित्य, खेल तथा सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में प्रदान किया जाता है | डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन पहले व्यक्ति थे जिन्हें 1954 में यह पुरस्कार प्रदान किया गया | डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के साथ ही सी.वी. रमन और सी. राजगोपालाचारी को भी इस पुरस्कार से सम्मनित किया गया था| सचिन तेंदुलकर एकमात्र तथा सबसे कम उम्र (40 वर्ष) के खिलाड़ी हैं, जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया है, तथा डीके कर्वे सबसे अधिक उम्र (100 वर्ष) के व्यक्ति हैं जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया|

भारत रत्न तांबे से बना पीपल के पत्ते के आकार का होता है और बीच में प्लैटिनम का चमकता सूर्य बना होता है तथा इसके नीचे चांदी में भारत रत्न लिखा होता है इसके पीछे की तरफ राज्य का प्रतीक और राज्य का आदर्श वाक्य होता है और यह सफेद फीते के साथ पहना जाता है | प्रतिवर्ष 26 जनवरी को भारत के राष्ट्रपति के द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है और प्रत्येक वर्ष अधिकतम तीन व्यक्तियों को ही यह पुरस्कार प्रदान किया जा सकता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्तेक वर्ष यह पुरस्कार प्रदान ही किये जाये |

किताब पढ़ना हमें एकांत में
विचार करने की आदत और सच्ची ख़ुशी देता हैं।

भारत रत्न प्राप्त करने वाले व्यक्ति को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र और एक मेडल दिया जाता है भारत रत्न के अंतर्गत नगद राशि देने का कोई भी प्रावधान नहीं है |1966 से पहले भारत में मरणोपरांत भारत रत्न देने की परंपरा नहीं थी लेकिन 1966 से मरणोपरांत भारत रत्न देने की परंपरा की शुरुआत हुई | मरणोपरांत भारत रत्न प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति लाल बहादुर शास्त्री जी थे | एक मात्र भारत रत्न जो वापस ले लिया गया वह सुभाषचंद्र बोस को प्रदान किया गया था | उन्हें यह सम्मान 1992 में प्रदान किया गया लेकिन कुछ विवादों के कारण उनके नाम के आगे से मरणोपरांत हटा लिया गया | इस प्रकार से अभी तक भारत में कुल 11 व्यक्तियों को ही मरणोपरांत भारत रत्न दिया गया है | वर्ष 2014 तक भारत रत्न को खेल जगत से नहीं जोड़ा गया था, 2014 में ही प्रथम बार खेल जगत के व्यक्तित्व सचिन तेंदुलकर को यह रत्न प्रदान किया गया | सचिन तेंदुलकर के साथ ही वैज्ञानिक सी.एन.आर.राव को भी इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया | भारत रत्न प्राप्त करने वाली भारत की पहली महिला श्रीमती इंदिरा गांधी थी | खान अब्दुल गफ्फार खान पहले विदेशी नागरिक हैं जिन्हें 1987 में भारत रत्न प्रदान किया गया |

नवीनतम सूची की घोषणा 25 जनवरी 2019 को गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर की गयी | नवीनतम सूची के अनुसार भारत रत्न प्राप्त करता व्यक्तियों में प्रणब मुखर्जी, नानाजी देशमुख और भूपेन हजारीका है| उन्हें यह पुरस्कार राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के द्वारा प्रदान किया गया | यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले ये क्रमशः

46, 47 और 48वें नंबर के व्यक्ति है | भूपेन हजारिका और नाना जी देशमुख को यह पुरस्कार मरणोपरांत प्राप्त हुआ है |अब तक कुल 48 व्यक्तियों को भारत रत्न पुरस्कार प्राप्त हो चुके है |

राष्ट्रीय आदर्श वाक्य :- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य सत्यमेव जयते है जिसका अर्थ है सत्य की हमेशा विजय होती है 'सत्यमेव जयते' मूलतः मुण्डक-उपनिषद का मंत्र 3.1.6 है। राष्ट्रीय वाक्य के रूप में मंत्र के केवल दो शब्दों को ही लिया गया है | पूर्ण मंत्र इस प्रकार है:

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।

येनाक्रमंत्यृषयो ह्याप्तकामो यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥

(श्लोक/ मंत्र का अर्थ :- अंततः सत्य की ही जय होती है न कि असत्य की। यही वह मार्ग है जिससे होकर आप्तकाम (जिनकी कामनाएं पूर्ण हो चुकी हों) ऋषीगण जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।**)**

यह भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के नीचे देवनागरी लिपि में अंकित है। 'सत्यमेव जयते' को राष्ट्रीय पटल पर लाने और उसका प्रचार-प्रसार करने का श्रेय मदन मोहन मालवीय को जाता है |

राष्ट्रीय फूल :- कमल के फूल को भारत में राष्ट्रीय फूल का दर्जा प्राप्त है |इसका वैज्ञानिक नाम नील्यूम्बो न्यूसीफेरा है। यह फूल उर्वरता, ज्ञान, समृद्धि, सम्मान, लंबी आयु और सुंदरता को दिखाता है।

राष्ट्रीय वृक्ष- वट(बरगद) वृक्ष :- देश के राष्ट्रीय वृक्ष का दर्जा वट वृक्ष को मिला हुआ है। यह एकता और दृढ़ता का प्रतीक है | जिस प्रकार भारत के विभिन्न धर्म व जाति के लोग एक साथ निवास करते हैं ठीक उसी प्रकार वट के पेड़ की शाखाओं पर एक साथ कई छोटे और बड़े जन्तु निवास करते हैं। इस वृक्ष का धार्मिक महत्व होने के साथ इसमें कई औषधीय गुण भी पाए जाते हैं।

राष्ट्रीय नदी गंगा :- गंगा नदी को देश की सबसे पवित्र नदी का दर्जा प्राप्त हैं | गंगा नदी की उत्पत्ति उत्तराखण्ड के हिमालय में गंगोत्री ग्लेशियर से होती है | जहाँ इसे भागीरथी के नाम से जाना जाता है | यह नदी करीब 2525 किलोमीटर लम्बी है और बांग्लादेश के निकट बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। प्राचीन समय से ही हिन्दूओं के लिये गंगा नदी का बहुत बड़ा धार्मिक महत्व रहा है। इसके पवित्र जल को कई अवसरों पर इस्तेमाल किया जाता है |

राष्ट्रीय मुद्रा रुपया :- भारत की आधिकारिक करेंसी भारतीय रुपया है। इसके संबंधित सभी मुद्दों को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया नियंत्रित करता है। भारतीय रुपये को देवनागरी लिपि के 'र' और रोमन लिपि के 'R' से चिन्हित किया गया है। 15 जुलाई 2011 को रुपये के चिन्ह के साथ भारत में सिक्कों की शुरुआत हुई | इस चिन्ह को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), मुम्बई के पोस्ट ग्रेजुएट छात्र श्री डी. उदय कुमार ने बनाया है। इस चिन्ह को वित्त मंत्रालय द्वारा आयोजित एक खुली प्रतियोगिता में प्राप्त हजारों डिजायनों में से चुना गया था |

राष्ट्रीय पशु :- भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ है भारत के राष्ट्रीय पशु बाघ को भारतीय संविधान सभा के द्वारा अप्रैल 1973 में मान्यता दी गई 1973 से पहले भारत का राष्ट्रीय पशु शेर था | बाघ का वैज्ञानिक नाम पैंथरा टाइग्रिस है | भारतीय वन्यजीव सुरक्षा की धारा 1972 के तहत इसे सुरक्षा प्रदान की गयी है।

राष्ट्रीय विरासत पशु :- भारत सरकार ने अक्टूबर 2010 को एशियाई हाथी को राष्ट्रीय विरासत पशु घोषित किया | राष्ट्रीय वन्यजीव की स्थाई बोर्ड समिति ने इस संदर्भ में 13 अक्टूबर 2010 की बैठक में स्वीकृति प्रदान की थी |

राष्ट्रीय जलीय जीव :- मीठे पानी की डॉल्फिन भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव है 18 मई 2010 को भारत के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने राष्ट्रीय क्वार्टिक पशु के रूप में गंगा डॉल्फिन को भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किया | इसे वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 अनुसूची 1 में शामिल किया गया है ज्ञातव्य है कि 5 अक्टूबर 2009 को तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की अध्यक्षता में हुई गंगा नदी घाटी प्राधिकरण की बैठक में बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सुझाव पर गंगा डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय जीव घोषित किए जाने का आग्रह किया गया था जिससे के बाद यह निर्णय लिया गया |

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी :- भारत ने अभी तक किसी भी भाषा को राष्ट्रीय भाषा के तौर पर मान्यता नहीं दी है, लेकिन हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, यह भाषा सरकारी कार्य के लिए उपयोग की जाती है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत हिन्दी को भारत की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है।

कु. मालती
पुस्तकालय अध्यक्ष
के.वि. चमेरा नं.1

राष्ट्रीय खेल दिवस

राष्ट्रीय खेल दिवस हर साल 29 अगस्त को मनाया जाता है | ये दिन हॉकी के दिग्गज खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन के मौके पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है | जिनका जन्म वर्ष 1905 में इसी तारीख को इलाहाबाद में हुआ था | मेजर ध्यानचंद ने अपनी कप्तानी में भारत को 3 ओलंपिक पदक वर्ष 1928, 1932, 1936 में दिलाये और वह एक मात्र हॉकी खिलाड़ी है जिन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया | उन्होंने अपने 22 साल के कैरियर में 400 से अधिक गोल किये |इसलिए ये दुनियाभर में **" हॉकी के जादूगर "** के नाम से प्रसिद्ध है |

वर्ष 2012 में भारत सरकार ने मेजर ध्यानचंद की जयंती को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया था |राष्ट्रीय खेल दिवस देश में राष्ट्रीय खेल टीमों और देश की खेल परंपराओं का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है | इस दिन विभिन्न आयु वर्ग के लोग कबड्डी, मैराथन, बास्केटबॉल, हॉकी आदि खेलों में भाग लेते है | खेलो में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले और विशेष योगदान देने वाले खिलाड़ियों को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्वारा उनके जीवन भर की उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय खेल पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है, जिसमें द्रोणाचार्य पुरस्कार, ध्यानचंद पुरस्कार, राजीव गाँधी पुरस्कार और अर्जुन पुरस्कार प्रमुख है |हरियाणा और पंजाब जैसे राज्यों में यह विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है |

Naina Singh
Class-VI

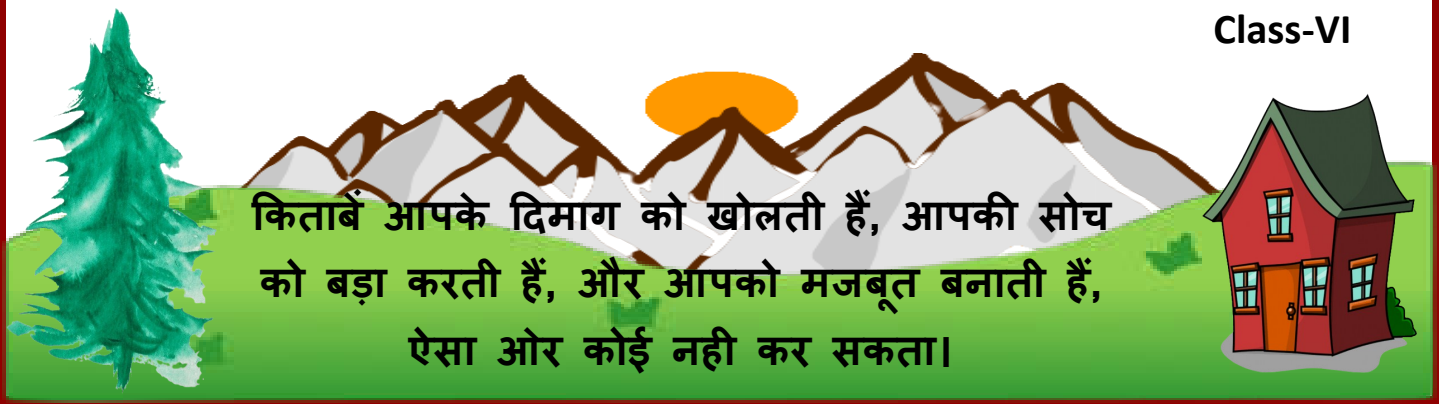

Importance of Library

Pragati Jain
Class-VIII

Library is a place of books,
All the parts of brain it hooks
Adventure, fiction and horror,
Fantasy, biography and thriller
There is everything in a library.
We should read books daily,
So, we can keep our brain healthy.
It is a source of entertainment
Improved vocabulary is our attainment.
It increases our imagination and creativity,
It motivates us and kills negativity,
Reading becomes interesting once stress is hurled,
It takes us to another world
Reading improves our writing skills,
With good thoughts our mind fills
They are the best friends of people,
Who feel sad, lonely and shy.
So, we see library is not a place of bore,
We should visit library more and more.

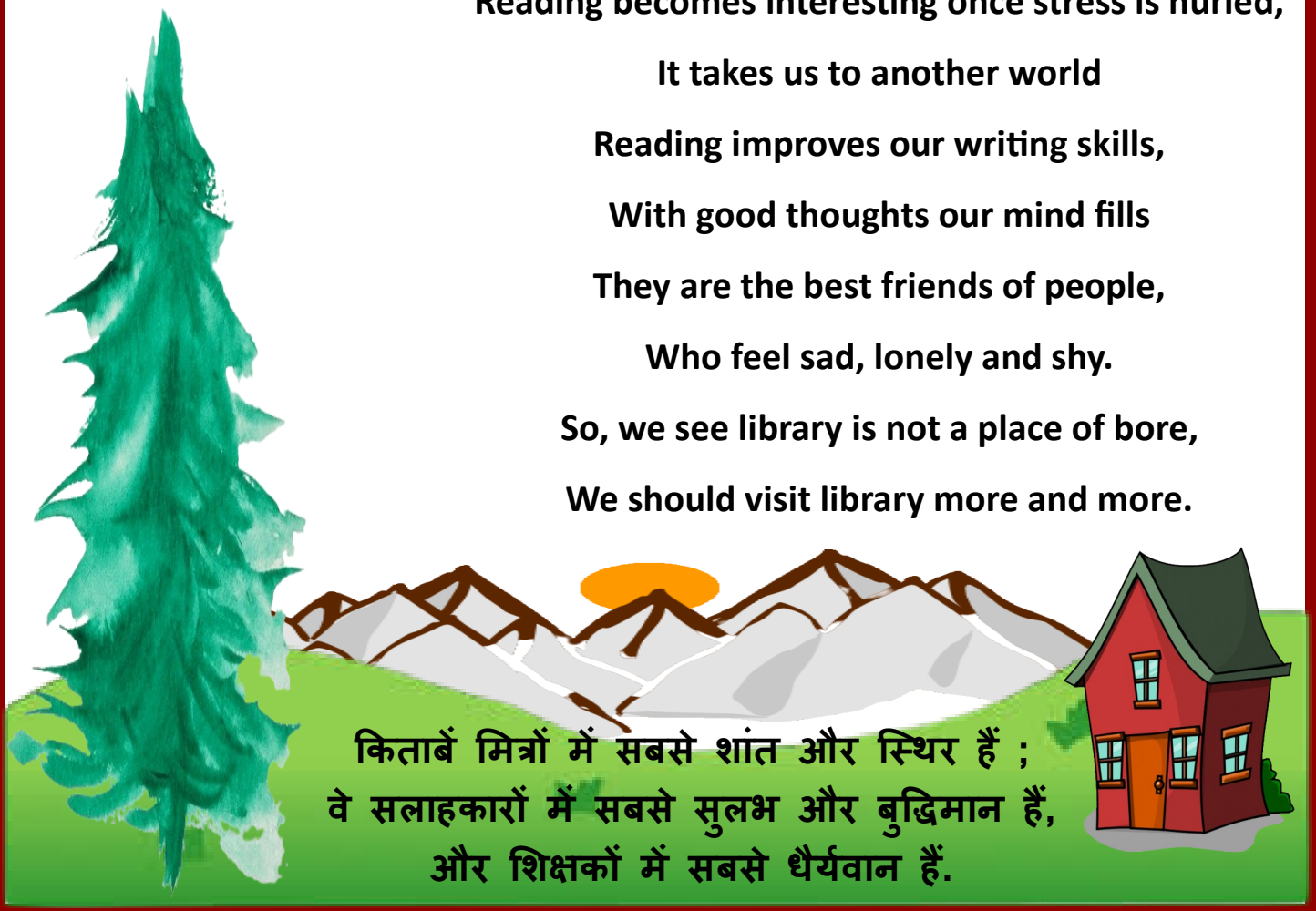

प्रकृति

नितिका ठाकुर
कक्षा = VIII

इसके बारे में सोचो तो नींद नहीं है आती

यह हमारे मन को कुछ इस तरह है भाती,

इससे हम इतना प्यार है करते

फिर क्यों हम इसके नुकसान से नहीं है डरते |

इस प्रकृति से है हमारे देश की आन बान शान

यह है हमारी देश की जान

करो इसका मान

इसकी वजह से तो है मेरी धरती महान |

पुस्तक प्रेमी सबसे अधिक
धनी और सुखी होते है |

Vasundhra
Class-VII

Importance of Reading

Reading daily is one of the best habits that one can accept. It develops your imagination and provides you with a wealth of knowledge. It is rightly said that books are your best companion. Books give you a new experience. It is important to read a good book for at least a few minutes each day to stretch the muscles of the brain for healthy functioning.

Benefits of Reading :- Reading books develop vivid imagination, knowledge and vocabulary. Here are some points describing importance of reading books -

- Reading gives exercises to the brain.
- Reading improves sleep.
- Reading gives knowledge.

Aishani
Class– VII

Benefits of Reading

Reading is a very good habit that one needs to develop in life. Good books can inform you, enlighten you and lead you in the right direction. There is no better companion than a good book. Reading is important because it is good for your overall well being. Once you start reading, you experience a whole new world. Reading develops language skills & vocabulary. Reading books is also a way to relax and reduce stress. It is important to read a good book at least for a minute each day to stretch the brain muscles for healthy functioning. It helps you develop positive thinking, reading also improves our communication skills which is a very important aspect of our life. The habit of reading is one of the best qualities that a person can passes to another one. Reading a good book is the most enjoyable experience one can love.

Importance of Books in current Era

Books are a wonderful source of gaining knowledge and is popularly referred to as 'Treasure of knowledge'. As the world is changing rapidly, we have entered into the digital age. In this period, things have changed drastically and so is book reading. Nowadays to read a book, we don't really need pages but we can read from a screen. Despite advancements in the field of reading, that is reading online , traditional books have not lost its significance.

While reading we get connected to the author. We can feel what the author is trying to convey. Reading books takes us to an imaginary world where at the end all we get is a surreal experience. When we read a book it is just us and the book and there is nothing sort of external disturbances. But while reading online, we receive so many pop up advertisement, notification from our social media accounts. If we are tempted by these distractions we tend to lose the flow of reading. Although we may read books online yet traditional books tend to enhance our retaining capacity.

Reading from a book has no major health related problems in comparison to online reading. Staring at the screen for a long time would cause severe headache, vision related problem, sleep disorientation and many other disease which would gradually affect health.

Many parts of the country is still fighting against illiteracy. In such a case even if internet connection is provided to these people ,it would be of no use because they will not know how to make use of it. But if they are taught by a teacher with the help of books they would be able to know how to read and write. Thus books are a weapon to fight against illiteracy . We can keep books with us forever and even conserve it for our future generation to read. Libraries are the best example to highlight the permanence of books.

Shashwat Shekhar
Class-VII

Sanitation

Sanitation generally refers to the provision of facilities and services for the safe disposal of humen urine & faeces. Inadequate sanitation is a major cause of disease world-wide and improving is known to a significant beneficial impact on health both in households and across communities. The word 'sanitation' also refers to the maintenance of hygienic condition through services such as garbage collection and wastewater disposal. There are several different kinds of sanitation such as— Ecological sanitation, community lead total sanitation, Improved sanitation, Container based sanitation, Dry sanitation, Sustainable sanitation, landfill, septic tank and lastly chemical toilet. We all should maintain sanitation and should spread awareness on the same matter. We should also encourage the younger generation to do so.

Anshika Raikwar
Class- VIII

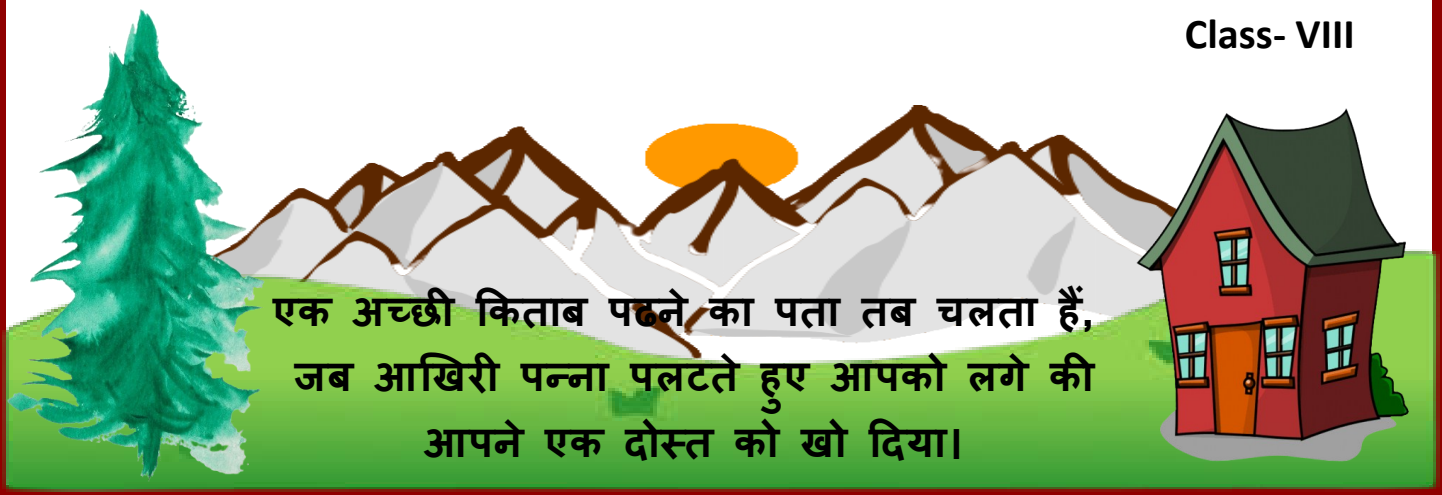

इंसान सफल तब होता है जब वह दुनिया को नही, खुद को बदलना शुरू कर देता है।

Nature's Wealth

Waterfall

waterfall teach us to move constantly like it, water cuts the stone, it teaches us that huge problems can be removed or solved by you, like water cuts the stone.

Tress

just as we cut down a tree, we burn it by cutting it. Still the tree doesn't mind it only gives us the good, It gives us oxygen similarly one should not do bad to bad people. If we do the same bad person then what difference be there between him and us ? we should forgive the bad person.

Rain

The rain Falls everywhere & moistens all the areas. It does not discriminate. In the same way, we should not discriminate between people and countries. We should treat everyone equal like rain does.

Palak Yadav
Class-VIII

अदभुत तथ्य

- शुतुरमुर्ग घोड़ों की तुलना में तेज दौड़ सकते है और नर शुतुरमुर्ग शेर की तरह दहाड़ सकते है |
- 45% लोग इस बात से अनजान है कि सूर्य एक तारा है |
- फ्लू ड्रैगन कि प्रत्येक आँख में 30,000 लेंस होते है |
- एक दिन में मोल 300 फीट पृथ्वी के अन्दर सुरंग बनाने में सक्षम है |
- एक खरगोश बिना अपना सिर हिलाए या घुमाए देख सकता है कि उसके पीछे क्या है |
- घोंघे 300 साल तक बिना खाए रह सकते हैं |
- 840,000 वर्ग मील में ग्रीनलैंड विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है , इसकी तुलना में आइसलैंड केवल 39,8000 वर्ग मील हैं |
- बेबी रॉबिन प्रति दिन 14 फीट केंचुए खा सकते है |
- गोता लगाते समय हाथी की सील दो घंटे तक अपनी साँस रोक सकती है |
- सिर्फ एक वर्ग इंच की त्वचा पर 20 मिलियन सूक्ष्म जीव रहते है |

Alenkrita
Class-VIII

Amazing Facts

- Almonds are a part of the peach family.
- Tigers have stripped skin not just stripped fur.
- Most people fall asleep in 7 minutes.
- If you sneeze too hard you can break a rib.
- It takes 492 seconds for sunlight to reach the earth.
- Average person eats almost 15000 IBS of food a year.
- The human eyes blinks and average of 4,200,000 times a year.
- Your eyes adjust in millisecond to any movement of your head .
- Camels have three eyelids .
- Astronauts can not whistle on the moon .
- The first cars did not have steering wheel. Drives steered with the lever.
- The African lungfish can survive without water for several months and breath using lungs rather then gills.
- The pigeon's bones are lighter than feathers.
- Wolves can go for over a week without eating .
- An aardvark can eat 50000 ants in one meal .
- A triggerfish can rotate each of its eyeballs.

Vansh
Class-VIII

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1

Kendriya Vidyalaya Chamera No.1

पुस्तक समीक्षा/BOOK REVIEW

1. **पुस्तक का नाम/Name of the Book-संगीताचर्या पं. गनेश प्रसाद शर्मा 'नादरस'*कृत* बंदिश निधि एवं साधना-सूत्र**

2. **लेखक का नाम / Name of the Writer- डा. प्रेम सागर ग्रोवर**

3. **प्रकाशक का नाम / Name of Publisher-बिट्वीन लाइन्ज़,14 शालीमार प्लाज़ा,पटियाला (पंजाब)**

4. **पुस्तक की कीमत / Price of the Book-रु. 700/-**

5. **पृष्ठ / Pages-1से 296.**

टिप्पणी/Remarks

सिद्ध संगीत गुरु,कुशल वाग्गेयकार,स्मरपित संगीत चिंतक 'पंडित गनेश प्रसाद शर्मा 'नादरस' का 'व्यक्तित्व और कृतित्व'प्रस्तुत पुस्तक का प्रतिपाद्य वैश्य है । इसमें बंदिश-रचना के बहुविध महत्व को भली-भांति रेखांकित करते हुये विद्यार्थियों की नैसर्गिक क्षमता का पोषण तथा वर्तमान विद्यालय संगीत-शिक्षण व्यवस्था में अपेक्षित परिवर्तन और सुधार जैसे विषयों पर संतोषजनक अध्ययन सामग्री प्रस्तुत की गई है ।पंडित गनेश प्रसाद शर्मा और उनके गुरुजनों की बन्दिशों की संगीत-लिपि के साथ-साथ ध्वन्यांकित रूप संलग्न कर डाक्टर प्रेम सागर ने नूतन एवं अनुकर्णीए कार्य किया है।ये पुस्तक उन शिक्षकों, विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक है जो धन की कमी के चलते हिंदोस्तानी संगीत की बारीकियों को सीखने से वंचित रह जाते हैंऔर उत्तम बन्दिशों की अमृत वर्षा का पान करना चाहते हैं ।

श्री चन्द्र मोहन

(संगीत शिक्षक)

Preshita Thakur
Class-V

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1

Kendriya Vidyalaya Chamera No.1

पुस्तक समीक्षा/BOOK REVIEW

1. पुस्तक का नाम/Name of the Book- चतुर विदूषक तेनालीराम
2. प्रकाशक का नाम / Name of Publisher- टिनी टाट, दिल्ली
3. पुस्तक की कीमत / Price of the Book-रु. 110/-
4. पृष्ठ / Pages-1से 144.

आज मैं जिस पुस्तक के बारे में अपने विचार लेकर प्रस्तुत हूँ उसका नाम है चतुर विदूषक तेनालीराम | इस पुस्तक में कुल 41 कहानियाँ है सभी कहानियाँ मुझे पसंद आई परंतु मेरी सबसे पसंदीदा कहानी का नाम है नदी का पानी | यह कहानी राजा कृष्णदेव राय के साथ-साथ उनकी राज्यसभा के एक बुजुर्ग और विद्वान आदमी की कहानी है | राजा जब भी किसी समस्या में होते या किसी व्यक्ति को न्याय दिलाने की बात होती तो राजा उनसे सलाह लिया करते थे | परंतु एक दिन वह बुजुर्ग व्यक्ति राज्यसभा में आकर कहने लगे, महाराज मैंने आपकी सेवा में बहुत साल गुजारे हैं, अब मैं अपनी बाकी की जिंदगी अपने गांव में बिताना चाहता हूँ | राजा को उन्हें हाँ करना पड़ा क्योंकि वह चाहते थे कि वह भी अपनी बाकी की जिंदगी खुशी से व्यतीत करें | राजा बहुत दुखी रहने लगे | एक दिन वह नदी के किनारे गए | उन्होंने देखा एक मुनि नदी के किनारे पेड़ के नीचे बैठे हुए हैं | राजा ने कहा इस नदी का पानी कितना साफ़ और नीला है | वह अगले दिन फिर आए और वही शब्द फिर से दोहराए | मुनि ने महाराज से कहा , महाराज जो शब्द आपने कल बोले थे वही शब्द आज बोल रहे है | महाराज ने कहा, परंतु तुम मुझे यह सब क्यों बता रहे हो? मुनि ने कहा मुझे पता चला है कि आपकी राज्यसभा से एक बुजुर्ग व विद्वान व्यक्ति चले गये है| महाराज ने कहा हाँ तो तुम मुझे यह सब क्यों बता रहे हो? मुनि ने कहा मैं आपको यह बताने की कोशिश कर रहा हूँ कि जिस तरह इस नदी का पानी कभी भी एक जगह नहीं ठहरता ठीक उसी प्रकार जिंदगी भी कभी नहीं ठहरती | हर तरह के बदलाव को हमें खुशी से स्वीकार कर लेना चाहिए, क्योंकि जिंदगी में लोगों के आने-जाने का सिलसिला चलता ही रहता है और तब भी हमारी जिंदगी चलती ही रहती है |

Book Review

Sudha Murthy – Wise and Otherwise

Sudha Murthy was born in 1950 in Karnataka and is now the chairperson of the Infosys Foundation.

This book contains 51 poignant and eye opening stories that showcase the myriad shades of human nature. This book provides accounts of people from all sections of society whether they are the rich socialites, the elites, villagers, middle class city dwellers ,beggars – Sudha Murthy provides an honest glimpse of their lives. From incredible examples of generosity to the meanest acts one can expect from men and women; she records everything with wry humor and a directness that touches the heart.

An old Man's Ageless wisdom

Sudha Murthy encounters an old man while traversing Orissa, the man wasn't aware that India had become independent and firmly believed the East India Company was ruling the country. He even refused to acknowledge the fact that paper currency is used as money because barter system is widespread in tribal societies, this man belonged to. He sympathetically remarked that for this money (paper) , people fight ,go away from their ancestral land , leave the forest and go to cities. He enquired whether our life was in complete without that piece of paper, well it certainly wasn't so as our ancestors had lived without it. Money can turn our lives upside down, this was an eternal truth this man was aware of yet we fail to realize.

A lesson in life from a beggar

In this anecdote one of the author's friend – Meena's life is drastically changed. Meena had a negative outlook towards life which was rather depressing, she never had anything positive to say on any subject or any person.

A beggar changed her life – this old man used to live in front of her house with his granddaughter. On a monsoon day when Meena was cursing the rain, even when she wasn't getting wet; she saw the beggar playing joyously with the young girl. Hunger and rain did not matter – they were drenched but happy.

Meena was forced by this scene to look at her own life which had so many comforts and luxuries, none of which they had . But they had the most important asset of all-i.e. they knew how to be happy with life as it was.

Apart from these precious lessons , Sudha Murthy also provides glimpses of the old days when she was juvenile and life was simple. All her stories provide information of different traditions and culture which is occasionally contrasted with the modern outlook. She also paints a grim picture of social evils such as dowry deaths, prostitution, corruption and ostentatious behavior of the wealthy class. She enlightens her readers and the people around her with her knowledge.

I was left surprised at times with twists while at times I was horrified to read the plot twists in her stories.

Somadri
Class-XII A

अच्छे विचारों का संघर्ष आपको पुस्तकों से आसानी से प्राप्त हो जाता हैं |

पुस्तकोपहार - उत्सव

केन्द्रीय विद्यालय प्रति वर्ष नये सत्र की शुरुआत में पुस्तक उपहार उत्सव मनाता है। इस उत्सव में छात्र-छात्राएं पिछली कक्षा की किताबों को विद्यालय पुस्तकालय में जमा करते हैं और अगर अगली कक्षा की पुस्तक उपलब्ध हो तो पुस्तकें प्राप्त करते हैं। केन्द्रीय विद्यालय की पुस्तकोंपहार योजना निशुल्क है जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक पेड़ों को कटने से बचाना है, क्योंकि कागज पेड़ों से ही बनते हैं।यदि आप सब इस पुस्तक उपहार योजना/ उत्सव में पुरानी कक्षा की पुस्तकों को दान करके और अगली कक्षा की पुस्तकें प्राप्त करके भाग लेते हैं, तो जाने-अनजाने में कितने पेड़ों को कटने से बचा सकते हैं।प्यारे बच्चों केंद्रीय विद्यालय के इस पुस्तक उपहार उत्सव में आप बढ़ चढ़कर हिस्सा ले औऱ सैंकड़ों पेड़ों को कटने से बचायें।

पठन माह 18 जून से 19 जुलाई 2022

भारत में पठन माह का आयोजन प्रतिवर्ष 18 जून से 19 जुलाई के मध्य केरल के पुस्तकालय आंदोलन के जनक पीएन पणिक्कर की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित किया जाता है। श्री पीएन पणिक्कर का जन्म 01 मार्च 1909 को केरल में हुआ था| वे पेशे से एक शिक्षक थे|साल 1945 में 47 ग्रामीण पुस्तकालयों के साथ तिरुविथामकूर ग्रंथशाला संघम की स्थापना मुहिम में उन्होंने नेतृत्व किया था। उनकी एसोसिएशन का नारा था 'पढ़ो और बढ़ो'। इसके बाद में केरल राज्य के गठन के बाद एसोसिएशन का नाम केरल ग्रंथशाला संघम हो गया। उन्होंने केरल के गांव-गांव की यात्रा की और लोगों को पढ़ने के महत्व से अवगत कराया था। इस तरह उन्होंने अपने नेटवर्क में 6,000 से ज्यादा पुस्तकालयों को जोड़ने में सफलता हासिल की। 1975 में ग्रंथशाला को 'कृपसकय अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया था। 19 जून 1995 को यह महान विभूति हमारे बीच से विदा हो गयी। जिसके बाद हर वर्ष उनकी पुण्यतिथि को नेशनल रीडिंग डे के रूप में मनाया जाने लगा।

केन्द्रीय विद्यालय चमेरा नं.1 में भी एस माह के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गयी जिसमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के द्वारा बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया गया |

विजेता कभी अपनी हार नहीं मानते और हार मानने वाले कभी जीतते नहीं।

पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

पठन माह के अंतर्गत 15 जुलाई 2022 को विद्यालय पुस्तकालय में नव- आगंतुक पुस्तकों को विधार्थियों और शिक्षकों के अवलोकन हेतु प्रदर्शित किया गया | जिसके अंतर्गत विधार्थियों द्वारा बनाएं गये पोस्टर्स को भी प्रदर्शित किया गया | प्रभारी प्राचार्य महोदय के द्वारा बच्चों के कार्य की सराहना की गयी|

अपने महान लक्ष्यों को तय कीजिये और तब तक नहीं रूके तब तक पा न लें।।

पुस्तकालय गतिविधियों की एक झलक

विद्यालय पुस्तकालय के द्वारा विधार्थियों में पढ़ने के प्रति रूचि उत्पन्न करने हेतु समय -समय पर आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों की एक झलक :-

Reader of the month Award

पुस्तक समीक्षा

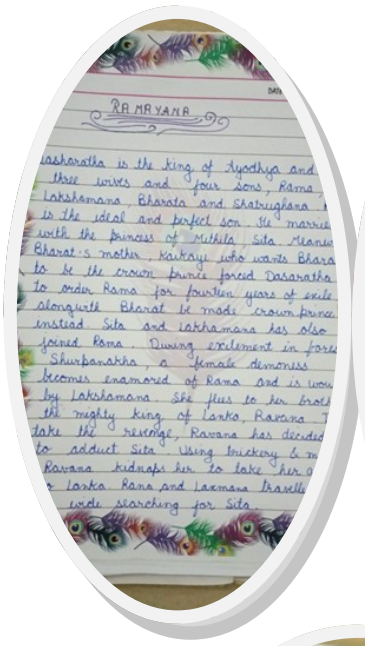

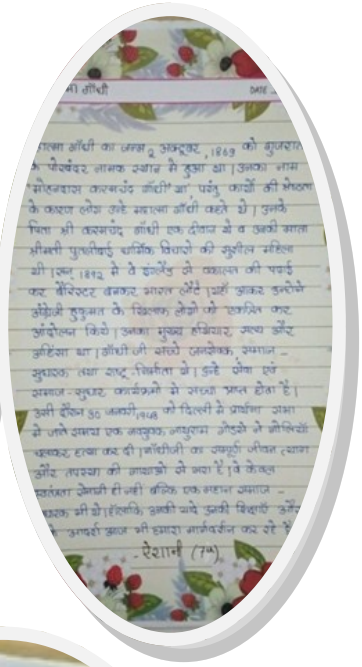

पढ़ने की कला एक हुनर है
किसी भी तरह के संचार और बातचीत को समझने का जितना बेहतर तरीके से हो सके।

भारत छोड़ो दिवस

प्रत्तेक वर्ष ९ अगस्त को भारत छोड़ो दिवस की वर्षगाँठ मनायी जाती है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 1942 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (AICC) के बॉम्बे सेशन में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की थी | इसी आंदोलन में गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया था | भारत छोड़ो आंदोलन शुरू होने का मुख्य कारण था देश को बगैर सहमति के विश्व युद्ध में झोंकना | इस आंदोलन के एक हिस्से के रूप में, बड़े पैमाने पर विरोध प्रर्दशन हुए, जिसके बाद देश में हिंसा हुई और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया |

विद्यालय पुस्तकालय के द्वारा इस वर्षगाँठ को मानाने हेतु विभिन्न कक्षाओं में उपरोक्त विषय से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | जिसमे बच्चों की प्रतिभागिता सकारात्मक रही |

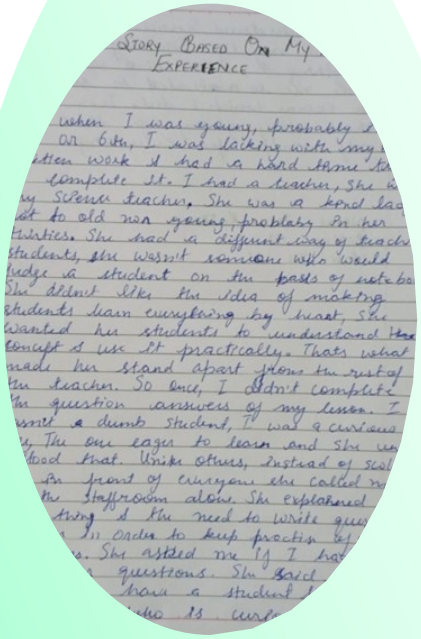

My life

My story

कैरियर परामर्श

कैरियर परामर्श सेवा के अंतर्गत कक्षा नवी से कक्षा बारहवी तक के विधार्थियों को UPSC तथा NDA जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी से अवगत कराया गया |

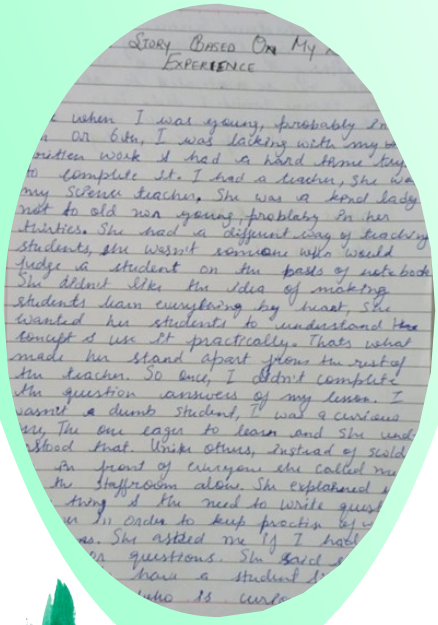

किताबें ज़िन्दगी का वो अस्त्र हैं जो बिना किसी को घाव दिए,
हमे जीत हासिल करने मे सहायता करते है...

पुस्तकालय गतिविधियां ऑनलाइन स्तर पर

विद्यालय पुस्तकालय के द्वारा समय समय कहानी सुनो, जीवनचरित्र, पुस्तक समीक्षा, पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम, साक्षात्कार आदि विभिन्न गतिविधियों का संचालन ऑनलाइन माध्यम से भी किया जाता है |

सफलता पाने के लिए हमें पहले यह विश्वास करना होगा कि हम यह कर सकते है।

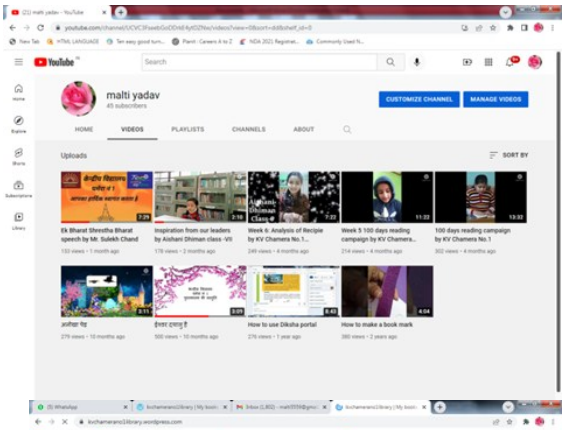

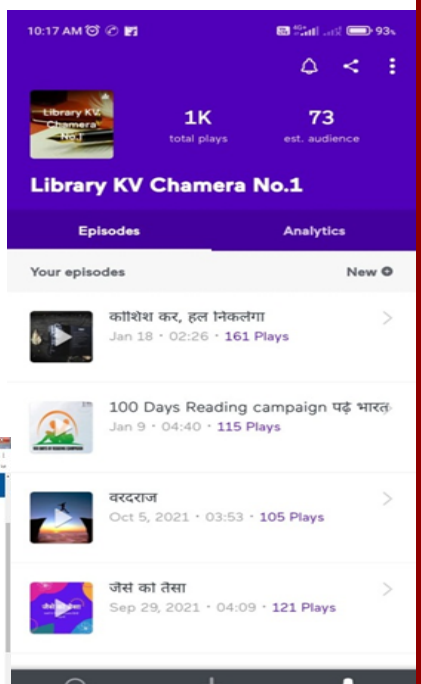

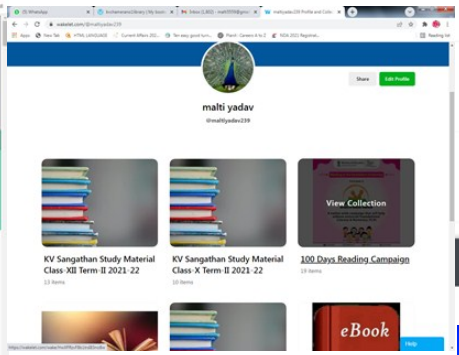

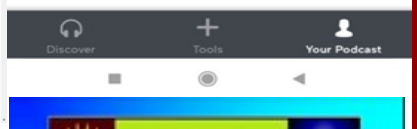

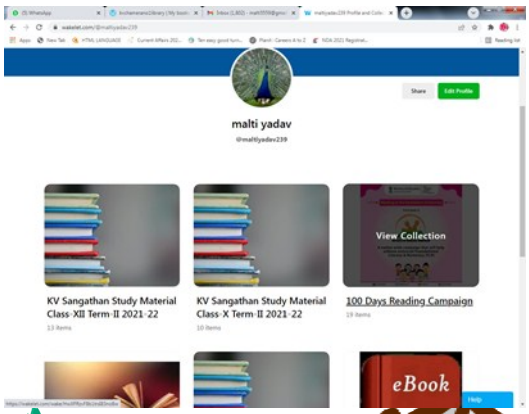

Library Rules

1. All students and staff of the school are members of the library.

2. A student can borrow only two books at a time for a period of two weeks.

3. A staff member can borrow maximum five books at a time for a period of one month.

4. Books will be issued to the students, during the library periods. No book will be issued or returned during the teaching hours.

5. Marking, underlining or writing on library books, periodicals, and newspapers is strictly forbidden.

6. Reference books and current periodicals will not be issued to any member. These can be consulted only in the library.

7. If the books are not returned within the specified time it will be viewed seriously and fine will be charged as per rules.

8. The librarian may call for a book at any time, even if the normal period of loan has not expired.

9. In case of book is misused, wrongly handled or lost the person concerned will have to replace the book or pay the current market price of the book.

10. After reading, make sure that the books, periodicals and newspapers are kept back at their respective places.

11. The members should take good care of library furnishings and equipment. Make sure the library looks as good when you leave as it did when you came in.

12. Drink and food are not allowed in the Library.

13. Library computers are for academic purpose only. Do not tamper with the computer settings. Follow the internet safety guidelines.

14. A 'No Dues Certificate' by each student is to be obtained from the librarian while his/her transfer/withdrawal from the school.

15. Strict order and silence shall be maintained in the library and speak softly if needed.

READ ALL YEAR
CLASSROOM & LIBRARY
READING is a HOOT!
CHILL OUT with COOL Books
NOTHING IS Sweeter than READING